इमामे हसन असकरी (अ0)
के मुसलमानों पर एहसानात

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला

यूँ तो मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) के एहसानात पूरी काएनात पर हैं क्योंकि यही वह मुक़द्दस ज़ातें हैं जो काएनात की पैदाईश की वजह और मख़लूक़ात की पैदाईश का सबब हैं। ''लौलाका लमा ख़लक़्तुल अफ़लाक'' की सनद साबित कर रही है कि जो भी है उनके तुफैल में है। कुदरत ने तख़लीक़ का निज़ाम यूँ रखा और तख़लीक़ की तरतीब यूँ क़ाएम की कि मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) का एहसान पूरी काएनात पर तो हो लेकिन काएनात में किसी का एहसान मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद पर न रहे। इसलिए उनको पहले पैदा किया और काएनात को बाद में।

एक फूल भी अगर चमन में ख़िलता है तो कितनों की मिन्नत का बोझ लिये हुए, ज़मीन का एहसान, पानी का एहसान, हवा का एहसानमन्द, सूरज और धूप का मोहताज, हवाओं का मिन्नतकश, बाग़बान की तकलीफों का एहसानमन्द। इसी तरह से एक इन्सान भी जब वजूद में आता है तो काएनात की बेशुमार चीज़ों के एहसान के नीचे दबा हुआ। कुदरत नहीं चाहती थी कि मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) काएनात की किसी भी चीज़ के एहसानमन्द रहें इसलिए इनको पहले पैदा किया और इनके तुफैल में काएनात को पैदा किया (या कुछ रवायतों से इन्हीं के नूर से काएनात की सारी चीजों की पैदाईश हुई है)।

अब काएनात पर रसूल (स0) व आले रसूल (अ0) का एहसान हुआ और आलमे मौजूदात उनका एहसानमन्द है। इसी तरह से अगर उनके इल्मी व अमली कारनामे न होते तो इस्लामे हक़ीक़ी महफूज़ न रहता। यह उन्हीं का सदक़ा है कि सही इस्लाम हम तक पहुँच सका वरना इस्लाम के दुश्मनों ने इस्लाम का नक़ाब ओढ़कर इस्लाम को मिटाने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। अगरचे मुसलमान हुकमराँ और तारीख़ व हदीस लिखने वाले हमारे अइम्मए मासूमीन (अ0) को एक सोची समझी साज़िश के तहत बुरी तरह नज़रअन्दाज़ करते रहे मगर आइम्मए मासूमीन कुदरत की तरफ से दिये गए इस्लाम की हिफ़ाज़त के फ़रीज़े को बहुत अच्छी तरह अन्जाम देते रहे। दुनिया अच्छी तरह से जानती थी कि हक़ीक़ी इस्लाम इन्हीं के पास है और यही रसूल (स0) के वारिस हैं मगर उनसे तअल्लुक़ रखना जुर्म था और इन से कोई हदीसे रसूल (स0) नक़ल करना मना था।

अगरचे सिहाहे सित्तः की सारे लेखकों ने हमारे इमामों, ख़ास तौर से दसवें और ग्यारहवें इमाम के ज़माने में ज़िन्दगियाँ बसर की। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी जिनकी सही बुख़ारी आम मुसलमानों में कुर्आने मजीद के बाद सबसे एतेबार वाली समझी जाती है, उनका इन्तेक़ाल 256 हि0 में हुआ और यह दसवें और ग्यारहवें इमाम के ज़माने के थे। मुस्लिम इब्ने हज्जाज नीशापूरी जिनकी किताब सही मुस्लिम दूसरे नम्बर पर

एतेबार वाली समझी जाती है 268 हिजरी में दुनिया से रुख़सत हुए और इमामे हसन असकरी (अ0) के ज़माने के थे। इसी तरह दारमी का इन्तेक़ाल 255 हिजरी में हुआ और यह भी इमाम अली नक़ी (अ0) व इमाम हसन असकरी (अ0) के ज़माने के थे। इब्ने माजा क़ज़वीनी ने 275 हिजरी में वफात पाई और इब्ने माजा 275 हि0, तिरमिज़ी 279 हि और नसाई 303 हिजरी में वफात पाए हैं। इन तारीख़ों से साबित होता है कि सिहाहे सित्ता के तमाम लेखकों ने इमामों का ज़माना देखा सिर्फ नसाई अलग है मगर उन्होंने भी ग़ैबते सुग़रा के ज़माने में ज़िन्दगी बसर की। मगर उनकी किताबों से ऐसा मालूम होता है कि जैसे उनके ज़माने में अहलेबैत (अ0) का ''मआज़ल्लाह'' कोई वजूद ही न हो।

यूँ तो हर इमाम इस्लाम की बारादरी में एक सुतून की हैसियत रखता है। मगर इमाम हसन असकरी (अ0) का दौर बेइन्तहा हस्सास और नज़ाकत वाला है। क्योंकि आप वह आख़री इमाम हैं जो ज़ाहिर में निगाहों के सामने हैं और आपके बाद नामालूम मुद्दत के लिए ग़ैबत का दौर शुरु होने वाला है। इसलिए क़यामत तक के लिए सारे इन्तिज़ाम अकेले इस इमाम को अन्जाम देना हैं। न सिर्फ यह कि क़यामत तक के लिए इमामत के सिलसिले को बाक़ी रखने का इन्तिज़ाम फरमाना है बल्कि इसका भी एहतेमाम फरमाना है कि ग़ैबत के ज़माने में लोग गुमराह न हो जाएँ और हक़ के रास्ते पर चलते रहें। इमाम हसन असकरी (अ0) का मुसलमानों पर यह बड़ा एहसान है बावजूद यह कि आक़ा का तक़रीबन पूरा इमामत का ज़माना क़ैद व बन्द की सख़्तियों में गुज़रा मगर क़यातम तक के लिए हमारी हिदायत का इन्तिज़ाम फरमा गए। अगर इमाम (अ0) यह एहतेमाम न करते तो हक़ के चाहने वाले अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बिना जाहिलियत की मौत मर जाते।

अगर इस्लामी तारीख़, ख़ास तौर से शीआने अहलेबैत (अ0) की तारीख़ को गहराई से देखा जाए तो यह हक़ीक़त खुलकर सामने आएगी की यह इमामे हसन असकरी (अ0) ही की कोशिशें थीं कि जिन्होंने एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया की मेहनतों और पहले के सब इमामों की कुर्बानियों को बेकार जाने से बचा लिया और दुनिया में हक़ीक़ी इस्लाम और शीआीयत को जो बढ़ावा मिला उसमें यूँ तो हर इमाम हिस्सेदार है मगर हमारे इस ग्यारहवें इमाम का किरदार ख़ास अहमियत वाला है। इस नाजुक हक़ीक़त को समझने के लिए इमामे हसन असकरी (अ0) की इमामत के दौर का एक हलका सा तारीख़ी खाका समझना ज़रूरी है। अब्बासी ख़लीफाओं ने हुकूमत के लिए ईरानियों का सहारा लिया था मगर वह इतना सर चढ़ गए कि उनको दबाना ज़रूरी हो गया। इसलिए अब अब्बासी ख़लीफाओं ने तुर्कों की मदद हासिल की और बग़दाद में तुर्कों का बोलबाला हो गया।यह तुर्क इस्लाम को पूरी तरह नहीं जानते थे इनको इस्लाम सिखाने वाले यही अब्बासी ख़लीफा थे। जब इन तुर्कों ने देखा कि रसूल के नाएब होने के दावेदार और इस्लाम के ज़िम्मेदार खुद बहुत ही अय्याश, ज़ालिम और बेदीन हैं तो यह तुर्क खुद इस्लाम से बदगुमान हो गए और उन्होंने ने बग़दाद में ज़ुल्म व सितम का बाज़ार गर्म कर दिया और किसी की भी जान व माल व इज़्ज़त व आबरू महफूज़ न रही। हर तरफ हाहाकार मच गई मगर अब्बासी ख़लीफा उनके सामने बेबस थे इसलिए मजबूरी में उन्हें अपनी राजधानी बग़दाद से सामरा में मुन्तक़िल

करना पड़ी इस तरह से सारे तुर्क सामरा मुन्तक़िल हो गए। यही वह ज़माना था जब हमारे दो इमामों, इमाम अली नक़ी (अ0) व इमाम हसन असकरी (अ0) को सामरा बुलाया गया। इन दोनों इमामों को बहुत ही सख़्तियों में रखा गया। मगर जुल्म व सितम की घटाएँ उनके किरदार के सूरज को छिपा न सकीं और तुर्क उन इमामों के लासानी किरदार से असर लेना शुरु हुए। उनको देखकर उन्हें अन्दाज़ा हुआ कि हक़ीक़ी इस्लाम क्या है और अहलेबैत (अ0) की मुहब्बत के निशान उनके पत्थर दिलों पर उभरने लगे। वहशी तुर्क इमामत के किरदार से मुतास्सिर होने लगे और बहुतों ने शीअीयत क़बूल कर ली और जिन्होंने शीअीयत क़बूल नहीं भी की उनके दिलों में भी अहलेबैत (अ0) के लिए नर्म गोशे पैदा हो गए। यही वह तुर्क थे जिन्होंने आज़रबाइजान, अफग़ानिस्तान, ईरान यहाँ तक कि हिन्दुस्तान में भी शीअीयत को बढ़ावा दिया। इस वक़्त शीआने हैदरे कर्रार की सबसे ज़ियादा आबादी ईरान में है। ईरान में शीअीयत को सबसे ज़ियादा बढ़ावा सफ़वी दौर में हुआ और यह सफ़वी बादशाह ईरानी नसल से नहीं बल्कि तुर्क थे। इस तरह ग़ैर शीआ तुर्कों के दिलों में भी मासूम इमामों के लिए नर्म गोशे मौजूद रहे और इसका सबूत यह है कि जब तुर्की में ख़िलाफते उस्मानिया क़ाएम हुई तो जुमे के खुत्बे में बारह इमामों के नामों को शामिल किया गया। और यही तुर्क ख़लीफा थे जिन्होंने मस्जिदे नबवी की मेहराबों पर चौदह इमामों के नाम लिखवाए जो आज तक बाक़ी हैं इस तरह से कहा जा सकता है कि अगरचे शीअी नुक़्त–ए–नज़र से इनकी हुकूमत सही नहीं थी मगर सदियों बाद भी टिमटिमाती ही सही मगर मुहब्बते अहलेबैत (अ0) की शमा उनके दिल में रौशन थी।

मुसलमानों पर बल्कि यूँ कहा जाए कि इन्सानी दुनिया पर इमामे हसन असकरी (अ0) का यह बड़ा एहसान कि उस इमाम के आने का एहतेमाम किया जिसे क़यामत तक के लिए इन्सानों की रहबरी करना है। दुश्मनों को इल्म था कि इमामे हसन असकरी (अ0) ही के सुल्ब से उस आख़री इमाम की पैदाईश होगी। इसलिए इमाम अली नक़ी (अ0) के इन्तेक़ाल के फौरन बाद अब्बासी ख़लीफा ने दाइयों की एक टीम इमाम के घर में भेजी ताकि यह पता लगाया जाए कि इमाम के घर में कोई औरत गर्भवती तो नहीं और जब उन औरतों ने रिपोर्ट दे दी कि इमाम के घर में किसी भी औरत में गर्भ की निशानी नहीं है तो इमामे हसन असकरी को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया ताकि उस आख़री इमाम की पैदाईश मुमकिन न हो सके, जिसे इमामे हसन असकरी के सुल्ब से आना है। मगर कुदरत के इन्तिज़ामों का कौन मुक़ाबला कर सकता है। जिस तरह फिरऔन ने पूरी कोशिश कर डाली कि जनाबे मूसा (अ0) दुनिया में न आ सकें मगर जब कुदरत ने अपना एख़्तियार दिखलाया तो उसके ही हाथों से मूसा (अ0) को परवरिश दिलवा दी। यहाँ खुदाई ने करवट बदली और मुसबेबुल असबाब ने असबाब फराहम कर दिये।

सामरा में ज़माने से बारिश नहीं हुई, सूखे के आसार पैदा हो गए, एक ईसाई राहिब आता है और कहता है कि ईसाई मज़हब हक़ है और सबूत यह है कि मैं दुआ करूँगा और बारिश हो जाएगी। बारिश हुई और कमज़ोर ईमान वालों का ईमान ख़तरे में पड़ गया, अक़ीदे डाँवाडोल होने लगे कि नाएबे रसूल ख़लीफ–ए–वक़्त ने दुआ

माँगी बारिश नहीं हुई, बड़े–बड़े मुक़द्दस दरबारी उलमा ने गिड़गिड़ाकर दुआएँ माँगी मगर क़बूल नहीं हुईं लेकिन एक ईसाई आलिम ने सिर्फ दुआ के लिए हाथ उठा दिये तो घटाएँ झूम कर आ गईं। इस वाक़ेए से हुकूमत के तख़्त हिलने लगे, ऐवाने हुकूमत में ज़लज़ला आ गया। जब इस्लाम ही नहीं रहेगा तो इस्लाम के नाम पर हुकूमत कैसे करेंगे? इसलिए अब इस्लाम का मुहाफ़िज़ याद आया। अब वारिसे रसूल (स0) की याद आई। दरबारियों ने ख़लीफ–ए–वक़्त को याद दिलाया कि अगर इस्लाम को बचाना है तो हसन असकरी को लाया जाए। इमाम (अ0) को क़ैदख़ाने से आज़ाद किया गया। इमाम (अ0) तशरीफ लाए और उस ईसाई राहिब के राज़ को ज़ाहिर किया कि उसकी उंगलियों के बीच किसी नबी की हड्डी दबी हुई है इसलिए जब यह दुआ के लिए हाथ उठाता है तो रहमते इलाही को जोश आता है और बारिश शुरु हो जाती है। ईसाई राहिब के हाथ से हड्डी लेकर दफन कर दी गयी। अब रसूल के बेटे ने दुआ के लिए हाथ उठाए, घटाएँ झूमकर आने लगीं और जल–थल भर गए इस तरह दुनिया ने देख लिया कि रसूल का गोश्त व पोस्त कौन है। लोग इमाम (अ0) के दीवाने हो गए। अब ख़लीफ–ए–वक़्त की हिम्मत न थी कि इमाम (अ0) को दोबारा क़ैदख़ाने में भेज सके इसलिए थोड़े वक़्त के लिए उसे इमाम (अ0) को आज़ाद करना पड़ा और इस तरह आख़री इमाम (अ0) की पैदाईश के असबाब फराहम हो गए और दुनिया क़यामततक के लिए जिहालत और कुफ्र की मौत मरने से बच गई।

इमाम (अ0) का एक और ज़बरदस्त एहसान यह है कि क़ैद की हालत ही में शरीअते हक़्क़ा के अहकाम को इकटठा किया और इमाम (अ0) के निगरानी में फ़िक़्ह के बहुत से नामुकम्मल हिस्से मुकम्मल हुए। जैसे बाबे रिज़ाअत, बाबे मीरास, बाबे हुदूद व दियात। इसी तरह इमाम (अ0) ने अपने ज़माने ही से उलमा की तक़लीद को समझाया और उनकी वह मश्हूर हदीस लोगों के सामने आईः–

फ़ुक़हा में से जो नफ़्स पर क़ाबू रखता हो, दीन की हिफाज़त करने वाला हो, हवा व हवस का बन्दा न हो और अपने मौला के हुक्मों को मानने वाला हो, लोगों पर ज़रूरी है कि उसकी तक़लीद करें।

आक़ा ने अपने तरीक़े से उलमाए दीन की अहमियत को सामने किया इसलिए रवायत में है कि जब कोई आलिम आता था तो आप उसकी इज़्ज़त के लिए उठ जाते थे। लोग हैरान होकर पूछते थे कि रसूल (स0) के फ़रज़न्द (बेटे) आपने इस शख़्स की इतनी इज़्ज़त क्यों की? तो मौला जवाब में फरमाते थे कि यही उलमा होंगे जो हमारी शरीअत की हिफ़ाज़त करेंगे और यही उलमा होंगे जो हमारी मुहब्बत का चिराग़ लोगों के दिलों में रौशन करेंगे। लोगों को उलमा की तरफ आने की धीरे–धीरे आदत पड़े इसके लिए इमाम (अ0) ने अपने नाएब मुक़र्रर फरमाए और लोगों को सख़्ती से ताकीद कर दी कि सीधी तरह मुझ तक न आओ बल्कि खुम्स की रक़म भी उन्हीं नाएबों की ख़िदमत में पेश करो और मसाएल भी उन्हीं से पता करो ताकि आम लोगों को उलमा से जुड़ने की धीरे–धीरे आदत पड़े क्योंकि आख़री इमाम के ज़हूर तक अब दुनिया को इन्हीं उलमए हक़ के दामन से जुड़े रहना है। देखा जाए तो इमामे हसन असकरी ने अपनी सीरत, कारनामों और कुर्बानियों से इस्लाम के क़िले को

क़यामत तक के लिए मज़बूती अता कर दी।

हमारे आक़ा की उम्र मुबारक कुल 28 साल की थी कि धोके के ज़हर से शहादत पाई। मगर शहादत के बाद भी ज़ुल्म का सिलसिला बन्द नहीं हुआ और आज तक बाक़ी है और इमाम (अ0) के रौज़े को बहुत ही ज़ालिमाना अन्दाज़ में अमरीकन और यहूदी एजेण्टों ने बमों से मिसमार कर दिया। इस रौज़े में चार मुक़द्दस क़ब्रें हैं, इमामे हसन असकरी (अ0) के अलावा दसवें इमाम अली नक़ी (अ0), हकीमा ख़ातून और इमामे हसन असकरी (अ0) की माँ भी यहाँ दफन हैं। नाम किसी का भी इस्तेमाल हो मगर हक़ीक़त यह है कि असल में यह अमरीकी और यहूदी साज़िश थी। अगरचे कुछ ख़ुदग़रज़ लोग जिसमें कुछ मोलवीनुमा भी शामिल हैं अपने ज़ाती फाएदों के लिए अमरीका और सेहूनियत को शीओं का सबसे बड़ा दोस्त साबित करने पर अड़े हैं जबकि असलियत यह है कि असल दुश्मन तो वह हमारे ही हैं क्योंकि इस्लाम का असली सरमाया तो हमारे पास है। इसीलिए इराक़ में बज़ाहिर नाम अलक़ाएदा वग़ैरा का है मगर असल में पीछे से इस्लाम दुश्मन ताक़तें काम कर रही हैं जिनमें अमरीका और इसराईल आगे–आगे हैं। हमारे ही कुछ मोलवी 'सद्दाम', 'अलक़ाएदा', 'तालिबान' वग़ैरः का नाम ले–ले कर अमरीका के दामन को बचाना चाहते हैं यह वही बुरी और नाकाम कोशिश है जो यज़ीद को चाहने वाले उसके दामन को क़त्ले इमाम हुसैन (अ0) से बचाने के लिए किया करते हैं कि असली क़ातिल तो उमरे सअ्द, इब्ने ज़ियाद व शिम्र वग़ैरः है इसलिए उनको बुरा–भला कह लीजिये मगर यज़ीद को आप लोग क्यों बुरा कहते हैं वह तो हज़ारों मील दूर बैठा हुआ था उसका क्या क़सूर है? उसी तरह से अमरीका और इसराईल का नमक खाने वाले मोलवी भी यही दलील पेश करते हैं कि ज़ुल्म तो सद्दाम ने किए, ज़ुल्म तो अलक़ाएदा और तालिबान कर रहे हैं इसलिए जितना बुरा–भला कहना है वह उनको कहिये बेचारे बुश की क्या ग़लती है? इस तरह से इस खुली हुई हक़ीक़त पर पर्दा डालने की नाकाम कोशिश करते हैं देखना है कि इन सबका आक़ा कौन है? यह किसके एजेण्ट हैं और किन के इशारों पर ज़ुल्म कर रहे हैं। सद्दाम ने जितने भी ज़ुल्म किए वह अमरीका ही की पॉलीसी के तहत और अलक़ाएदा और तालिबान को जन्म देने वाला सिवाए अमरीका के और कौन है? इस तरह की बातों का जवाब ख़्वाजा हसन निज़ामी ने क्या ख़ूब दिया है। जब किसी ने आपके सामने कहा कि यज़ीद पर क्यों लानत होती है वह तो शाम में हज़ारों मील दूर बैठा हुआ था। अगर लानत के क़ाबिल है तो वह लोग जो कर्बला में इमाम हुसन (अ0) के क़त्ल में शरीक थे तो उन्होंने फरमाया कि ऐ शख़्स तेरी अक़्ल तो कुत्ते से भी बदतर मालूम देती है। उसने घबराकर पूछ यह कैसे? तो फरमाया देखों अगर कोई कुत्ते पर ढेला मारता है तो कुत्ता ढेले की तरफ नहीं दौड़ता बल्कि उस शख़्स पर हमले की कोशिश करता है जिसने ढीला फेंका है। तेरी अक़्ल में इतना भी नहीं आया कि असल सबब कौन था? क़त्ल का मन्सूबा बनाने वाला तो यज़ीद ही था। अगर फौज की जीत को बादशाह की जीत कहा जाएगा तो अगर किसी के हुक्म से क़त्ल हो तो क़ातिल तख़्ते हुकूमत पर बैठने वाला ही कहा जाएगा।